"समय के समक्ष" का परिचय

१४ जनवरी, २०२५

आत्मीय पाठक,

शुभ मकर संक्रान्ति! नववर्ष २०२५ की हार्दिक शुभकामनाएँ!

नवीन आरम्भों के इस समय में आप सभी से जुड़ना एक अद्‌भुत बात है। और मुझे लगता है कि एक जैसी सोच, एक जैसी रुचि रखने वाले लोगों से जुड़ने का समय *हमेशा ही* सही समय होता है।

१ जनवरी, यानी नववर्ष दिवस का सिद्धयोग पथ पर असाधारण महत्त्व है। इस दिन हम सभी सिद्धयोग वैश्विक हॉल में एक-दूसरे की संगति में थे। हमने नववर्ष का स्वागत उस रूप में किया जो हमें सबसे अधिक प्रिय है, जिसका हम इस पथ पर सर्वाधिक रसास्वादन करते हैं। हमने अपनी श्रीगुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द के साथ 'मधुर सरप्राइज़' में भाग लिया।

मैं जानती हूँ कि जब मैं श्रीगुरुमाई के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रही हूँ तो ऐसा मैं सभी सिद्धयोगियों की ओर से कर रही हूँ कि उन्होंने कृपा कर हमें वर्ष २०२५ के लिए अपना सन्देश प्रदान किया है। इस सन्देश में एक लय है, यह एक सूत्र जैसा है—*कितना कुछ* निहित है इसमें! आप भी मानते हैं न इस बात को? एक ओर, इस सन्देश की केन्द्रीय अवधारणा से अर्थात् 'समय' से हम अत्यधिक गहराई से परिचित हैं। जैसे ही हमारा जन्म होता है, हमें समय के साथ लड़ने के लिए विवश कर दिया जाता है। समय के साथ हमारा एक सम्बन्ध बन जाता है और चाहे हमें वह पसन्द हो या न हो, अपने जीवनभर हम इस सम्बन्ध में रहते हैं। फिर भी, आप जानते हैं, और मैं जानती हूँ और हम *सभी* जानते हैं कि समय के बारे में ऐसा कुछ है जो गूढ़, दुर्ग्राह्य और पूरी तरह चुनौतीपूर्ण बना ही रहता है। हम चाहे कितने ही वयस्क हों या युवा हों, हम सदैव समय के साथ जूझ रहे हैं, सदैव समय को समझने की कोशिश कर रहे हैं, सदैव यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि कैसे सर्वाधिक कल्याणकारी रूप में हमारे व समय के बीच परस्पर व्यवहार हो, परस्पर प्रभाव का सम्बन्ध स्थापित हो। यह हमें उसी चिरकालिक प्रश्न पर ले आता है : समय क्या *है* ?

इस वर्ष २ जनवरी को गुरुमाई जी श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा करने के लिए आए हुए बच्चों, युवाओं और उनके माता-पिता के साथ सत्संग कर रही थीं। सत्संग के दौरान, एक ग्यारह वर्षीय बच्चे के माता-पिता ने कहा कि उनके बेटे को समय के विषय में अत्यधिक रुचि होने लगी है। कई

दिनों तक, रात को सोने से पहले वह अपने माता-पिता से समय के बारे में पूछता रहा और समय के विषय पर अपने विचार व धारणाएँ व्यक्त करता रहा। अपने बेटे की इस बढ़ती रुचि को सम्बल देने के लिए, उसके पिता ने समय व शाश्वतता के विषय में उसके साथ डॉक्यूमेन्टरी फ़िल्में [प्रमाणविषयक प्रस्तुतिकरण] देखना शुरू किया।

स्पष्ट ही है कि जैसे इस बच्चे को अपने अन्दर से सहज ही ज्ञात हुआ, समय के बारे में खोज करने व समझने के लिए *बहुत कुछ* है। और हम वर्तमान में जिस सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण में हैं, उसे देखते हुए, मुझे श्रीगुरुमाई के प्रति अतीव कृतज्ञता महसूस होती है कि उन्होंने *इस* समय, *यह* सन्देश प्रदान किया है। दुनिया अनिश्चित-सी, अस्थिर-सी प्रतीत होती है। हम देखते हैं कि जिन बुनियादों पर हमने अपना जीवन, अपने समुदाय और अपने देश खड़े किए हैं, आज वे उतनी ठोस व मज़बूत नहीं रह गई हैं जितना कि हमने कभी सोचा था। किसी भी चीज़ के बारे में पूरे यक़ीन के साथ कह पाना कठिन है। हमारी वास्तविकता लगभग दिन-प्रति-दिन बदलती जा रही है।

फिर भी, इस सबके बीच, वर्ष २०२५ के लिए श्रीगुरुमाई का सन्देश हमें अपनी क्षमता का, अपने सामर्थ्य का स्मरण कराता है। अपने सन्देश में [अंग्रेज़ी में] गुरुमाई जी "अपने समय" शब्दों का प्रयोग एक बार नहीं, बल्कि दो बार करती हैं। भले ही हमारा अस्थिर लगने वाली उन चीज़ों से सामना हो जिनसे हम पहले से परिचित हैं, भले ही हमें ऐसा लगे की चीज़ों पर से हमारा नियन्त्रण व्यापक रूप से खोता जा रहा है और ऐसी परिस्थिति का हमें सामना करना है, फिर भी, हम अपने समय के साथ क्या करें इसका चुनाव पूरी तरह से हमारे हाथ में है।

ऐसा कहने पर भी, और समय के शायद बहुत दुष्कर स्वभाव पर विचार कर, मेरे पास आपके लिए एक समाचार अवश्य है जो मेरे हृदय को *अत्यधिक आनन्द* से भर देता है। इस पूरे वर्ष, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर हमें श्रीगुरुमाई के इस वर्ष के सन्देश पर उनसे सिखावनियाँ प्राप्त होती रहेंगी।

गुरुमाई जी ने कहा है कि आप हर एक सिखावनी को अपना व्यक्तिगत मन्त्र समझ सकते हैं, जिसे आप आसानी से याद कर सकते हैं और अपने दैनिक कार्य करते हुए उसे लागू करने के तरीक़े खोज सकते हैं। मुझे यक़ीन है कि ये सिखावनियाँ इस वर्ष हमारी सिद्धयोग साधना के लिए बहुत सहायक होंगी, इनसे आपको चिन्तन-मनन करने, इनके अर्थ समझने व इनका परिपालन करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। मैं जानती हूँ कि आपमें से अनेक लोग पहले से ही इस पर विचार कर रहे होंगे कि आप गुरुमाई जी के इस वर्ष के सन्देश का अभ्यास कैसे करेंगे। हाल ही में एक व्यक्ति ने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर लिखकर भेजा :

> "गुरुमाई जी का सन्देश सुनकर जो बात मेरे लिए उभरकर आई, वह यह कि मुझे समय का सम्मान करने का अभ्यास करना होगा। मुझे समय का आदर करना होगा। मुझे समय के प्रति

सराहना व कृतज्ञता का भाव रखना होगा, इसकी क़द्र करनी होगी। समय मेरे जीवन के लिए अत्यावश्यक है। मेरे हृदय में एक गहरा चिन्तन यह उभर रहा है कि इस सन्देश का परिपालन करने के लिए मुझे किस चीज़ की आवश्यकता है, कैसे और कहाँ मैं इसका परिपालन करूँ।"

यह तो हमें एक के बाद एक मिलने वाला प्रसाद ही है—पहले हमें श्रीगुरुमाई का सन्देश मिला और अब गुरुमाई जी की ये सिखावनियाँ जो उनके सन्देश का अन्वेषण करने में हमारा मार्गदर्शन करेंगी। मुझे लगता है कि मुझे आश्चर्यजनक रूप से विपुल आशीर्वाद मिले हैं, ऐसा लगता है कि मैं अत्यधिक सौभाग्यशाली हूँ। अपने शिष्यों के प्रति और इस पथ पर आए नए साधकों के प्रति गुरुमाई जी को कितना प्रेम है, इस बात ने मेरे हृदय को गहराई से छू लिया है।

मुझे ऐसा भी लगता है कि इस सद्भाग्य के साथ-साथ उत्तरदायित्व का भाव भी आता है। यही गुरु-शिष्य सम्बन्ध का मूल है, है न? श्रीगुरु अपनी सिखावनियाँ प्रदान करती हैं और शिष्य होने के नाते यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम उनकी सिखावनियों का पालन करें—हम उनका अन्वेषण करें, उनके अर्थ को समझें, और अपने जीवन के परिप्रेक्ष्य में उन्हें लागू करने का प्रयत्न करें। आख़िरकार, जब हम श्रीगुरु की सिखावनियों के साथ संवाद स्थापित करते हैं, जब हम उनके साथ एक हो जाते हैं तभी वे सिखावनियाँ हमारे लिए वास्तविक बन जाती हैं, तभी हम उनमें निहित रूपान्तरणकारी शक्ति की अनुभूति करते हैं और स्वयं अपनी शक्ति तक पहुँचने के लिए उतने ही सक्षम होते जाते हैं।

और अब—समय है कि मैं समापन करूँ।

आदर सहित,
ईशा सरदेसाई

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।